HINDI (HONS)-6th SEMESTER
Topics- प्रेक्षागृह/ Class-1/ Hindi Method

- **प्रेक्षागृह किसे कहते हैं?**
  - वह स्थान जहाँ सहज में नाटक खेला जाए और दर्शक बैठकर बिना व्यवधान के नाटक को देखें- प्रेक्षागृह कहलाता है। प्रेक्षागृह को नाट्यशाला एवं थिएटर भी कहा जाता है। प्राचीन काल में राजमहल का वह कमरा जहाँ राजा मंत्रियों से मिलकर रणनीति बनाते थे और गुप्त मंत्रणा करते थे। प्रेक्षागृह कहलाता था। प्रेक्षागृह का स्थान खुला रहता था। प्रेक्षागृह में नाटकों का आयोजन होता था। साथ ही यहाँ समय-समय पर मंत्रणा भी होती थी।
- **प्रेक्षागृह की रूपरेखा को स्पष्ट कीजिए?**
  - भरतमुनि ने अपने 'नाट्यशास्त्र' नामक पुस्तक में तीन प्रकार के प्रेक्षागृह का नियोजन किया है- 1. लंबा आयताकार 2. वर्गाकार 3. तिकोना। ये तीनों के भी तीन भाग हैं- ज्येष्ठ, मध्यम और कनिष्ठ। इनमें से सबसे बड़ा प्रेक्षागृह 108 हाथ लंबा होता है, मध्यम आकार का प्रेक्षागृह 64 हाथ लंबा होता है और सबसे छोटे आकार का प्रेक्षागृह 32 हाथ लंबा होता है। इसमें सबसे बड़ा देवताओं का, मध्यम राजाओं का और छोटा साधारण लोगों का होता है। भरतमुनि ने इन तीनों प्रकार के प्रेक्षागृह में मध्यम को आकार के प्रेक्षागृह को ही श्रेष्ठ माना है, क्योंकि वहाँ पढे और बोले जा रहे शब्दों तथा गाये जा रहे गीतों को अत्यंत सुविधा के साथ स्पष्ट सुन सकते हैं। इन प्रेक्षागृह को यदि हाथ से नापें तो उसका क्रम इस प्रकार होगा- 8 अणु का रज, 8 रज का बल, 8 बल का लिक्षा, 8 लिक्षा का यूक, 8 यूक यव, 8 यव का अंगुल, 24 अंगुल का हाथ (लगभग डेढ़ फूट), और चार हाथ का दंड होता है।

HINDI (HONS)-6th SEMESTER
Topics- आत्मकथा/ Class-2/ Hindi Method

- **आत्मकथा किसे कहते हैं?**
  - आत्मकथा का अर्थ है अपनी कथा। जब कोई लेखक अवच्छंद रूप से अपने जीवन का वर्णन करता है तो उसे आत्मकथा कहते है। यह संस्मरण के नजदीक की विधा है। संस्मरण में लेखक अपने आसपास घट रही घटनाओं का वर्णन करता है, किन्तु दूसरी ओर आत्मकथा के केंद्र में लेखक स्वयं होता है।
- **आत्मकथा पर एक टीका लिखें?**
  - आत्मकथा हमेशा व्यक्ति परख होती है, यानी वह लेखक के

दृष्टिकोण से लिखी जाती है। इसमें लेखक अनजाने में या जानबूझकर अपने जीवन के महत्वपूर्ण तथ्य छुपा सकता है। या फिर कुछ मात्रा में असत्य वर्णन भी कर सकता है। एक

और आत्मकथा से व्यक्ति के जीवन और परिस्थितियों के बारे में पढ़कर पाठकों को जानकारी एवं मनोरंजन मिलता है, तो दूसरी और इतिहासकार आत्माओं की जानकारी को स्वयं में मान्य नहीं ठहराते और सदैव अन्य स्रोतों से उनमें कही गई बातों की पुष्टि करने का प्रयास करते हैं।
आत्मकथा सहानुभूति का सबसे सरल माध्यम है। आत्मकथा के द्वारा लेखक अपने जीवन, परिवेश, महत्वपूर्ण घटनाओं, विचारधारा, निजी अनुभव, अपनी क्षमताओं और दुर्बलताओं तथा अनेक समय की सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है।

hi.m.wikibook.org

वर्तमान में आत्मकथा एक सशक्त विधा के रूप में उभरी है। आत्मकथा के माध्यम से उस काल सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक घटनाओं का चित्रण भी सहज में हो जाता है। अतः आत्मकथा व्यक्ति के स्वयं के जीवन को तो उद्घाटित करती ही है, ऐतिहासिक घटनाओं को भी उजागर कर देती है।

HINDI (HONS)-6th SEMESTER
Topics- आत्मकथा/ Class-3/ Hindi Method

- **हिंदी के प्रमुख आत्मकथाओं का इतिहास:-**
  - हिंदी में आत्मकथा लेखन की एक लंबी परंपरा है। हिंदी की प्रथम आत्मकथा बनारसी दास जैन कृत 'अर्द्धकथा' (1641) है। इसके बाद भारतेंदु हरिश्चंद्र ने स्वयं की आत्मकथा 'एक कहानी कुछ आपबीती कुछ जगबीती' का आरंभिक अंश 'प्रथम लेख' शीर्षक से प्रकाशित किया था। इसके बाद सत्यानंद अग्निहोत्री कृत 'मुझ में देव जीवन का विकास' का नाम आता है। इसके बाद परमानंद की आत्मकथा 'आपबीती' प्रकाशित हुई। स्वतंत्रता के बाद आत्मकथा लेखन का धीरे-धीरे विकास होता गया। कुछ आत्मकथाओं को इस प्रकार देख सकते हैं- वियोगी हरी- मेरा जीवन प्रवाह, यशपाल- सिंहावलोकन, हरिवंश राय बच्चन- क्या भूलूं क्या याद करूं, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, भीष्म साहनी- आज के अतीत, ओमप्रकाश बाल्मीकि- जूठन, मोहनदास नैमिशराय- अपने-अपने पिंजरे प्रमुख हैं।

HINDI (HONS)-6th SEMESTER

Topics- अक्करमाशी/ Class-4/ Hindi Method

- समाज की दृष्टि में अमान्य संबंधों से जन्मी संतान कोमराठी में

अक्करमाशी कहते हैं। अर्थात 'अक्करमाशी' का अर्थ है- नाजायज औलाद। शरण कुमार लिंबाले की आत्मकथा 'अक्कर माशी' दलित लेखकों द्वारा लिखी गई आत्मकथाओं में महत्व पूर्ण स्थान रखती है। असामाजिक एवं अनैतिक संबंधों से उत्पन्न अवैध संतति की व्यथा कथा का सशक्त अनुवाद डॉ॰ सूर्यनारायण रणसुभे ने किया है।

शरणकुमार लिंबाले: शरणकुमार लिंबाले मराठी भाषा के लेखक, कवि और साहित्यिक आलोचक हैं। उन्होंने 40 से अधिक पुस्तके लिखी हैं। उनकी कुछ प्रमुख रचनाएं हैं- आत्मकथा- अक्करमाशी, कहानी संग्रह- देवता आदमी, मेरा परिवार, हरिजन मास्टर, त्रिमुख, नाग पीछा कर रहे हैं, नशे में छुआछूत, हम नहीं जाएंगे।